

ति ह्मि वि कस ल्कन्द मा यो दि प्र ह्म त न प्र सय वी ग पु व त वि क सि ता
 द्वा स म न्दा न दा मि । य वी ना ल्क १० म न्दा ४ क त म पि यु हि ना क्ता द द
 क्रामु ग्म क्री ग वा मा या सी ना मा य स म द न स मा या मि नि न्वा मि र्य
 नी ॥ २६ ॥ इ थ मि गि त स म य ॥ वृ स का ग हु रि की न ल क वा मि
 म र्ख सी ल्क ता न्दा द धा ना व क् ४ स ल्क य क पु स म न र न पु ल क हि
 द मा पा द य न ॥ दु न्द न्द न्द म य न ४ प थु ड व न रु ठा र्ग शु व न्द

अशा नरु क्ति

ASHA ARCHIVES

2186

I

कासायानमिदं निजनहजनाय सकृत्कृतं वयं निरुपयामि ॥
 विद न्यायिकीं वार्तां यमदनं ॥ ६० ॥ मयि मयि ॥ नहं सायात्यर्त्तं वनि
 गमिरुपयामि कुनर्त्तं विपाक ॥ ४५ ॥ न्नीजनयतीत्यमविमृष्य ॥ ४॥ २२
 महि ॥ ४५ ॥ न्नीजनयतीत्यमविमृष्य ॥ ४॥ २२
 वासनमिव दारुं विषयिनी ॥ अथ नृणां दुर्बलानां नृणां दुर्बलानां

१४१

विषमं प्रार्थनं किं शिरःकुलं सुकृताङ्गीकुलं किमानं विरहिता
 कृताङ्गीकुलं ॥ सुकृताङ्गीकुलं विरहिताङ्गीकुलं किमानं विरहिता
 व ॥ ४५ ॥ सुकृताङ्गीकुलं विरहिताङ्गीकुलं किमानं विरहिता
 निधिः कया किमिगर्त्तं न्नीजनयतीत्यमविमृष्य ॥ ४५ ॥ २२
 नृपगथाय हनसीत ॥ ४॥ मयि मयि ॥ नहं सायात्यर्त्तं वनि
 शाननिता ॥ ४५ ॥ सुकृताङ्गीकुलं विरहिताङ्गीकुलं किमानं विरहिता

इति

ज्ञाया ४ (अमरा ४) नमः सिंहाला धनपत्रं निर्गच्छा नर्वा र्था रूपा मपि
श्रुत्य नमनसा । कृता वै शिवा र्त्तं रपुति हत धियाम ० अति नमपि । तः
मासमाद्या संति मपत्र मगान र्क यमिता ॥ ५ ॥ अमि र्वा पा मनी रूपा मपि
हि न्ना यययसां कृता कि न्नासा वि विंश कलिग विवर्क ययययसां
यदा अ नमः गुद विनी मय नि ४ सं हिमन सां कर्म मान वी ० नि नमः
यदा मात कनपि ॥ ६ ॥ नार्गि न कर्म या गृहा विग सुखं ह कुन र्गा र

२३

ग ॥ (अमरा ४) तद हि शीतया ॥ गतयन ॥ कृ सान ग र्क गय ४ ॥ अर्ग वि
रु मरु निर्म नियमिग ४ पुा (निर्म मरु ४ यद ग क कर्म कृ गय द व म नि
रि र्त्त ४ र्त्त ४ रि र्त्त ४ रि र्त्त ४ रि र्त्त ४ ॥ ३ ॥ रा गमन सा का व य म व ड का रूपा न ग
फ व य म व ग का ४ ॥ कालान वा ता व ड म व ड ग न डी न्द्रि व य म व
जी न्द्रि ४ ॥ ४ ॥ व ति रि म स्व ना कृ र्त्त य ति र्त्त कि र्त्त गिल ४ ग म ग ति
ति थि ला ड न्द्रि र्त्त का ग न म य न ॥ ६ ॥ नि व रु ला ला ग म य प रू व व रु

नमोऽहिनापिपिविषया विद्यागकाहृदः ह्येजगिनजनाजल्वयम
 मं। यजनुस्वर्गाग्यादुल्लयत्रिगायायमनसः स्वयं ह्युक्ताङ्कनसमसः
 स्वमननं विदधति ॥ १३ ॥ बुद्धिस्तनं विवकनिर्मलधियः कर्तुं ह्य
 हाइकनं यन्मूख्यपलागराजविधिनामकानकानि ह्यहः ॥ १४ ॥
 नप्रागां फानपूजानसंपुनितवप्राफादृष्टपुण्ययानः वाक्सागयनिगुह
 यपिपविष्कृतनशकावर्यं ॥ १५ ॥ धन्यानीतिविकन्दननिवसतां

नानां ॥ १६ ॥ शुभां महीवर्यदिक्रा माहावातावसिमहि। मयिमहिम
 दिष्टकृत्वा मदि किमिष्वर्न ॥ १७ ॥ ननगानविठानभयकानवसह
 गनवादर्चयव ॥ १८ ॥ नपमिद्रियुमगकवर्यं, लुनरा नानमिगानयाविगः
 ॥ १९ ॥ विपूनददयनिर्णः कश्चिद्गङ्गा निगपूनाविधासमसर्दक
 वार्थविजिग्यतयथा। ००० हिगुवनान्यगधीनस्वतुर्दभार्तुङ्गा कति
 पययूनः स्वाभ्यर्पसां कयषमदकान ॥ २० ॥ ४ शुक्रयां यस्यां कनम

विन जातं नृप गतं नृव सुसा ज्ञेय क ०० वव दू मान ४ क्रि ति युजं । गद ३
 स्यादः । गत वय वय वन स्या वय गथा पिषाद क ०० विद भति जगतां पुत्र
 गमद ४ ॥ ३६ ॥ मन्वी । कु जन स खया पनीयुत ४ सर्व पिं यी । नख नृ सु रित्क
 त्याग मव स युग भर्ग ना स्तीठा म युज ४ । गद दू र्द दता थ वा किम पित कृडा
 द निद्रा र ४ । धी क विक गान पुत्र स्वाध मा धन कनान् कं विदु गित ग्या पि
 य ॥ ३७ ॥ सजा ग ४ का व्या ही न दन निपूना मृद्धि धव लं क पी लं य स्या र्व वि

३६

ने हि ग म लं का न विध थ र ति ३ पुन ग । न पु व न म गी हि ४ । के विद ध नान ग तिः
 ४ क ४ पू सा मय मठ लु द यो द न रु व ४ ॥ ४० ॥ ०० गि नृ प सै का द ४ ॥ १० ॥
 अथ मन ४ ॥ र्वा धन ४ । य न र्वा य गी हि पु ति दि व स स मा ना ध व दू धा पु सा दः
 किं न र्गु वि ठा सि द्ध द य कृ श क नी ल । पु स न त्व या न ४ र्ग य मू दि ग वि का मः
 ति ग ३ । ह वि वि क ४ र्ग क ले ४ कि म हि ल वि र्ग पृ थ ति ना ॥ ३१ ॥ य नि गु म
 सि किं मू धा क व न वि रु वि श्र म गी ह र्य र व ति य प रु थ र व ति ना न य

॥ अविगमनसमन्वितविज्ञादिदीयसंकल्पयन् गच्छिगन्मागमाननर
 वा मिलागमनर् ॥ ५२ ॥ अगस्मादिनमन्त्रियार्थरुगनादावास्कादाष्टय
 ॥ ५३ ॥ यामार्गम ॥ ५४ ॥ ४४४ समनव्यापानदकं कृत्वा ॥ ५५ ॥ स्वात्मी रावसूर्यदिः
 सत्यजनीजाकलालालागिमाहयाहृत्तर्गुनीरुवनतिवग ४ पुसि
 दाधूना ॥ ५६ ॥ माहं माहं यामासुपाहु यनगिं वडा द्युगाम ॥ ५७ ॥ ४४
 र्जना रं गी निगठ शुवासा रं गमं गकृत्वा ॥ कावायिषु वृद्धदधुवग शिल्खाः

३५

२६

ह्रस्वस्त्रीष्वरकालाष्ट्रष्वयन् ॥ ५८ ॥ अविगमनसमन्वितविज्ञादिदीयसंकल्पयन् गच्छिगन्मागमाननर
 विगयमासमाकृतायिमासाह्यायिनी मांथया ॥ ५९ ॥ कृपातशुकूटीविहाननम
 लीप्राय्यापानपत्नीगत्वा ॥ ६० ॥ कर्त्तुं गिं नं किन ४ पुवि ४४ रुवनदावाहि
 या ना हसिन थार्वकिषूया निपागपमिं गी रिक्रामवक्रामह ॥ ६१ ॥
 अष्टमिगं सनसकवय ४ पार्श्वगादाक्रि क्षया ४ पक्षसीनावलयननिः
 गीवामलाग्रहिनी नीयशत्यिर्वकृत् रुवनसा स्वादनलं पटलं नाव वृत्त

४५ विहङ्गाहसा निर्विकल्पसमा^५ ॥६६॥ ^५फ ४ श्रिय ४ सुकलकामः
 इद्यासुग ४॥ किं न्यस्य पदं गिनति विद्विषांग ४ किं । संपूजिगा ४ पुः
 नयि^५ विहर्वसुग ४ किं कल्पहिगांगन एगांगनरिहताकिं ॥६७॥
 रुकिर्लक्षमननजसुर्यददिक सुहानवधूषनममथजा विकाना ४॥ स ३६
 सुग्नदावनहिगां^५ विजनावनानावेनाममहि किम ४ पलसार्थनीय
 ॥६८॥ गस्मादनक ३ मज्जनीयनमपकार्हाङ्गद्वय विनय किमरिनसः

द्विकल्प ४॥ यस्यानुर्वगिन^५ मगुयनाधिपर्यराभदय ४ कयनलाकमगा
 एवकि ॥ ६९ ॥ यागासमाविहसियहिहविलर्घ्यदिग्म सुलं शुभसि
 मानस्यापनन। शुन्याविजातुविमलं कथमात्मलीनीङ्गद्वयन नस्यंगति
 निर्वृत्तमविद्यन ॥ ७० ॥ ^५किमनः मनसिवाधन ॥ ॥ अथनित्यानीत्यविना
 ल ॥ किंवद ॥ सुगिहि ४ पुनानं प० न ४ ममर्मुर्महाविहर्व ४ सुग्नम

मकुटिनिवाहस्तद ४ कर्मक्रियाविगुर्भ ४ मरुत्तुर्वैरुवद ४ खकाल
नवनाविश्वंस्कालानर्तस्वात्मान्देषदयवसमनर्थः ॥ ४१ ॥ र्वनिष्ककु
मिहि ४ ॥ ११ ॥ यदामन् ४ ४१ ॥ मानिपागियुष्मन्नाग्रादतीग ४ स्मडा ४
४३ ॥ निप्रवृलमकनग्राहनितया ४ ४४ ॥ नागवृत्त्युक्तर्द्धननिधनपादितः
विधत्ता ४ ४१ ॥ नीनकावाक्कलिक्कलरुक्कुशुगुवपत् ४ ॥ १२ ॥ ॥ गम

रुक्मिणी गति विगलिता वृक्षावहनावलीहृष्टिनेष्ट्यतिवद्वगवविनम
वर्कुचलालायग । वाक्कनादियगववाध्ववजर्नर्ह्ययाश्चुषग, हाकः
वृष्टपूत्रवस्यजीर्मुवयस ४ पूगयमिगयग ॥ १३ ॥ वस्तुसिर्गपतिठावीक
ठिनानूहानां ह्वानंजनापलीरवस्यगथपूमीस आवापिगहिमकली
पनीहृष्टयानिवास्तुलकूपमीवइ नगलीनरुत्थ ४ ॥ १४ ॥ यावत्तुस्तुमि
दीप्तनीनमनूजंयावर्जुनाद नगायावर्जुदियगकि नपुतिरुगायावत्क

थानायुषः ४ आत्म (७) यस्मिन्नावदवदिदृक्का कायः ४ पुयनामहान् हृदी कफः
 वनयुक्पखन नैपुयुयग ४ कीदृश ४ ॥ १७ ॥ गय ४ स्यक्त ॥ सक्त ४ किम
 विनिवहाम ४ सुननदी ० गु लमादा नान्दा नामगयलीवयाम ४ हविनयै । वि
 वामशा ४ भासुयीन विविधका कासगनसा नविद्य ४ किं कर्म ४ कति
 ययनिभमायु विजन ॥ १८ ॥ इनाना भ ४ सासिपुनगवनविना ४ किमिगु

५०

हीसापि शुवनमिदं चित्तगंगा तदहं वासाकं वानयन पदवि (७) भुमार्ग
 गगाया । थार्यदक विखयकनिनिभटगुगो ४ रिमानकी वहाक्त ४ कन
 कनी ४ ग ४ हीयमानातनार्त्त ॥ ६१ ॥ नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
 समर्त्त सहर्त्त ४ हीवाह गुगमयस मर्त्त ४ नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
 लवुम्ब विम हन ॥ नजानक ह ४ गनीन गिदना न हगात ॥ ४ ६२ ॥ जी
 सुयवमनालथ ४ ध्वदय यागीवा नन नन ॥ हीगा जी ४ उ ४ म ४ व ४ थ

रुवर्गायागागुनरू विना। किंयुक्तं समाख्यं गिवलवानकाल ४ कृणाः
 नाकृमिअरूपां मदनाकंकी प्रियुगर्नमृक्का सिनायागणि ॥ ६३ ॥ म
 हव्वनवाजगगा मविष्वनठनार्दभवाजगदकनात्मनि। नवमुहद
 यतिपत्तिनस्तिगंभगर्थविद्यावान्। (सुन्द) (अखन) ॥ ६४ ॥ सुनरू
 नश्चस्मान्निगालेकापिप्रतिनसुखाहिमा ४ ४ भगधनीषुनजनिषु
 विसृतिग ४ रेवाशाजमदिग्नमिव मिवमिवयाफवयस ४ कदायाह्य

५२

आशा मरुक्कि
 ASHA ARCHIVES

2186

I